



2071



प्राचीन भारतीय

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्  
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

रु. 10.00

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सेट)  
978-81-7450-872-0

# जीत की पीपनी



पढ़ना है समझना



प्रथम संस्करण : अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

© गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

#### पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, दुलदुल विश्वास, मुकेश मालवीय, राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ,

सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समवयक - लतिका गुप्ता

चित्रांकन - निधि बाधवा

सञ्चाच तथा आवरण - निधि बाधवा

डॉ.टी.पी. आर्पेटर - अचना गुप्ता, नीलम चौधरी, मानसी सिन्हा

#### आधार ज्ञापन

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर वसुधा कामथ, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रशिक्षणीयी संस्थान, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर गणजन्म शर्मा, विभागाध्यक्ष, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर गणजन्म शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंजुला माथुर, अध्यक्ष, रीडिंग डेवलपमेंट सैल, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

#### गण्डीय समीक्षा समिति

श्री अशोक वाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी

विश्वविद्यालय, वर्षी; प्रोफेसर फरीदा, अब्दुल्ला, खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अपूर्वनंद, रोडर, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा. शब्दनम रिहा, सीई.ओ., आई.एल.एव.एस., मुंबई; मुख्ती नुरहत हसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर, निदेशक, दिगंत, जयपुर।

80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में संचित, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द शर्मा, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा

..... द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सैट)  
978-81-7450-872-0

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ चार सत्रों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोजामर्झ की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियाँ जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हरेक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

सर्वाधिकार सुरक्षित  
प्रकाशक की पूर्वअनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को आपना तथा  
इसेकृतिकी, परिवर्ती, फॉटोप्रिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः  
प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

- एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय  
१. एन.सी.ई.आर.टी. कैप्स, श्री अरविंद शर्मा, नई दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708  
१०८, १०० फोटो रोड, हेली एस्प्रेसेन, होल्डेकेरी, बनारसकरी III स्क्रेन, वैष्णव ५६० ०८५  
२. नवजीवन ट्रस्ट भवन, डाकघर नवजीवन, अदमदाबाद ३८० ०१४ फोन : ०७९-२७५४१४४६  
३. सी.डब्ल्यू.सी. कैप्स, निकट: भवनकल बस स्टॉप चन्द्रहटी, कालनकाला ७०० ११४  
फोन : ०३३-२५३०४५४  
४. सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लेक्स, मालीगांव, युवाहाटी ७८१ ०२१ फोन : ०३६१-२६७४८६९

प्रकाशन संस्थाएँ  
अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : पी. राजाकुमार मुख्य उत्पादन अधिकारी : शिव कुमार  
मुख्य संपादक : श्वेता उत्पल मुख्य व्यापार प्रबंधक : गौतम गांगुली

# जीत की पीपनी



जीत



बबली



2

एक दिन जीत की पेंसिल कहीं खो गई।  
उसने अपनी पेंसिल हर जगह ढूँढ़ी।



3

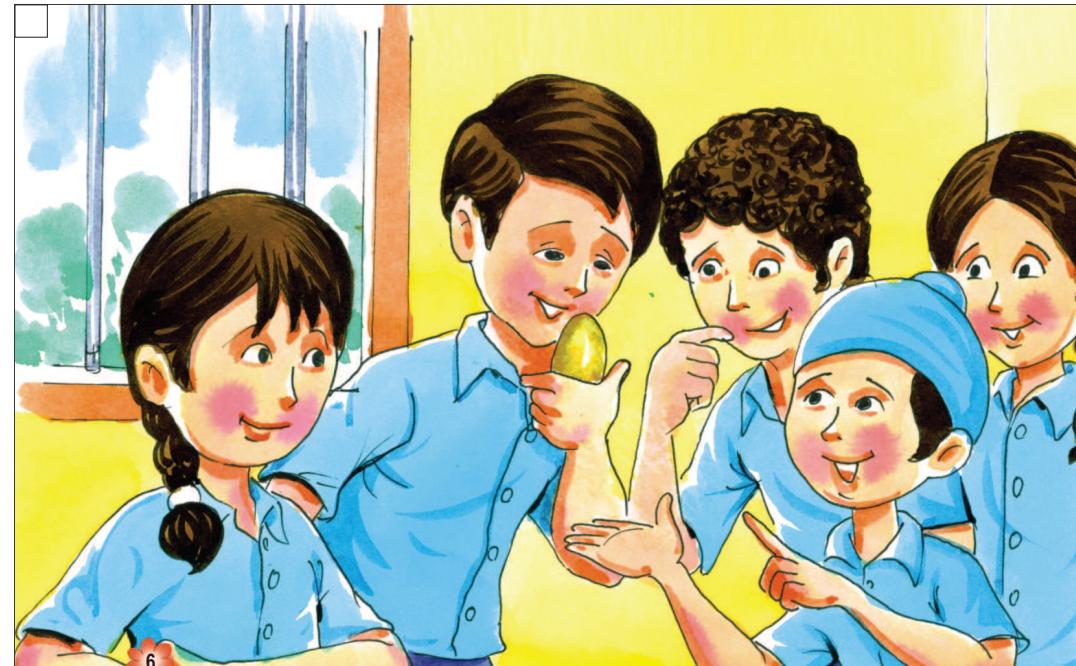
जीत ने पेंसिल अपने बस्ते में ढूँढ़ी।  
उसके बस्ते में बहुत सारा सामान था।



बबली ने जीत का बस्ता उलट दिया।  
उसमें से गिल्ली, पंख, धागे, ढक्कन और पत्थर गिर पड़े।



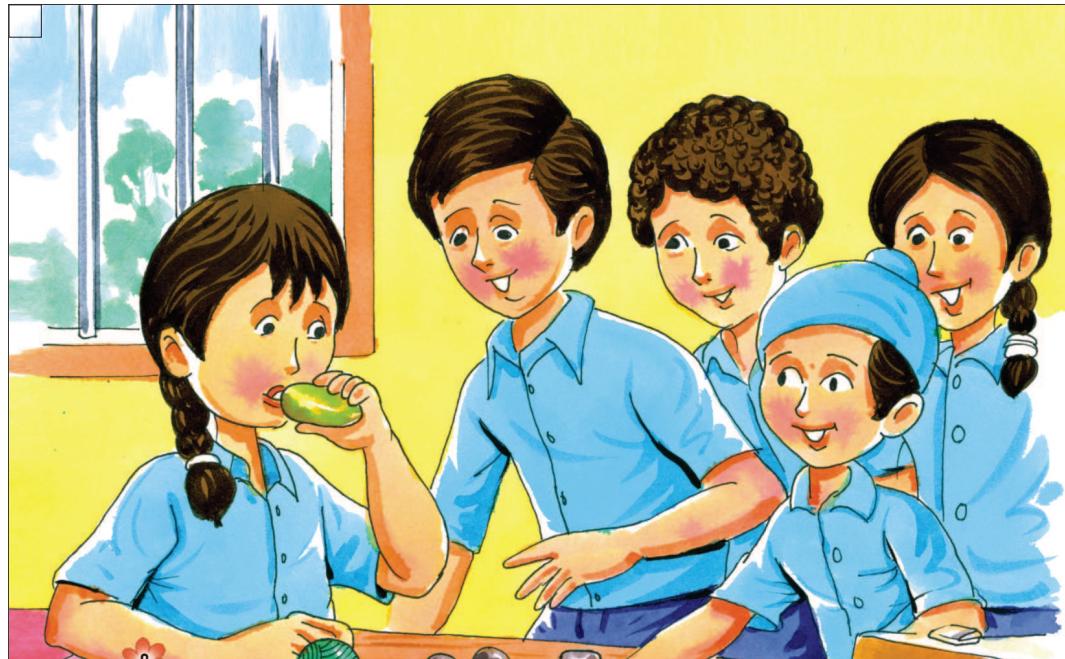
जीत के बस्ते में से और कई चीज़ें निकलीं।  
बबली ने आम की एक गुठली उठा ली।



6 समीर आम की गुठली को देखने लगा।  
जीत ने बताया कि वह पीपनी है।

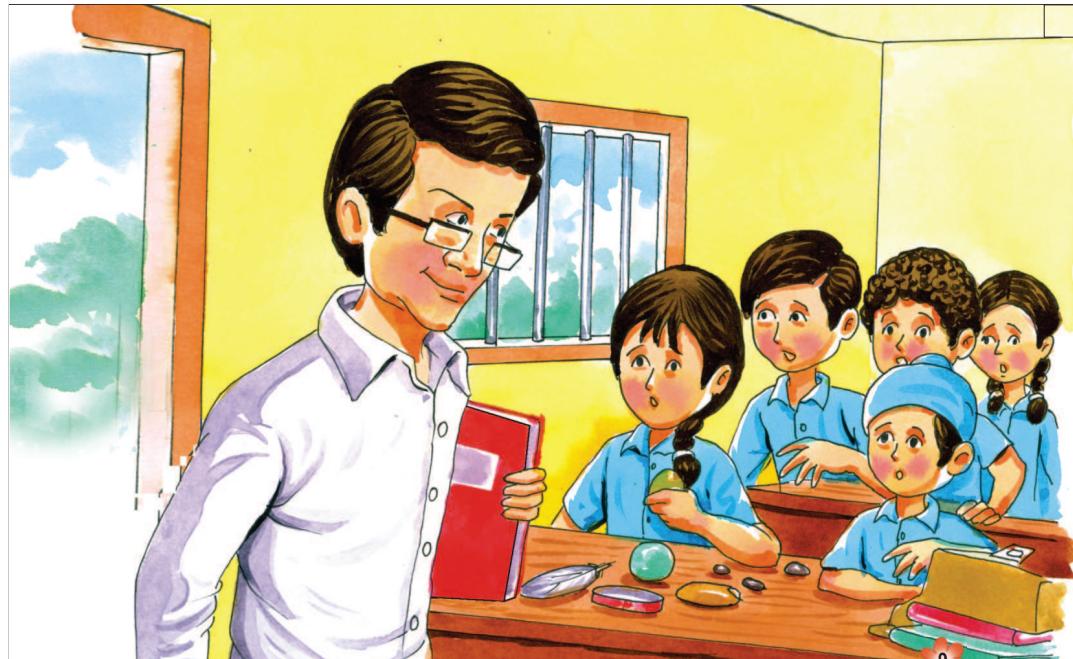


7 जीत ने आम की गुठली को धिसकर पीपनी बनाई थी।  
पीपनी से बहुत ज्ञोर की आवाज़ निकलती थी।



8

जीत ने पीपनी बजाने को कहा।  
बबली ने ज्ञोर से पीपनी बजाई।



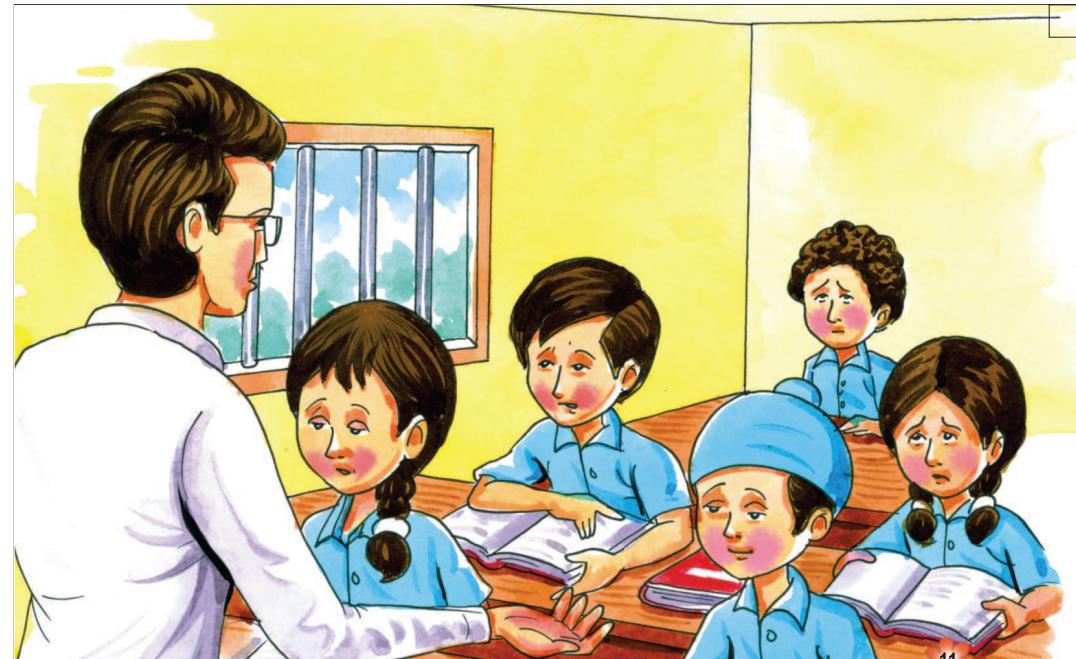
9

इतने में मास्टर जी आ गए।  
उन्होंने पीपनी की आवाज़ सुन ली थी।



10

सारे बच्चे अपनी जगह पर वापिस बैठ गए।  
सबने अपनी-अपनी किताब निकाल ली।



11

मास्टर जी ने पूछा कि आवाज़ कौन कर रहा है।  
सब चुप रहे।

12

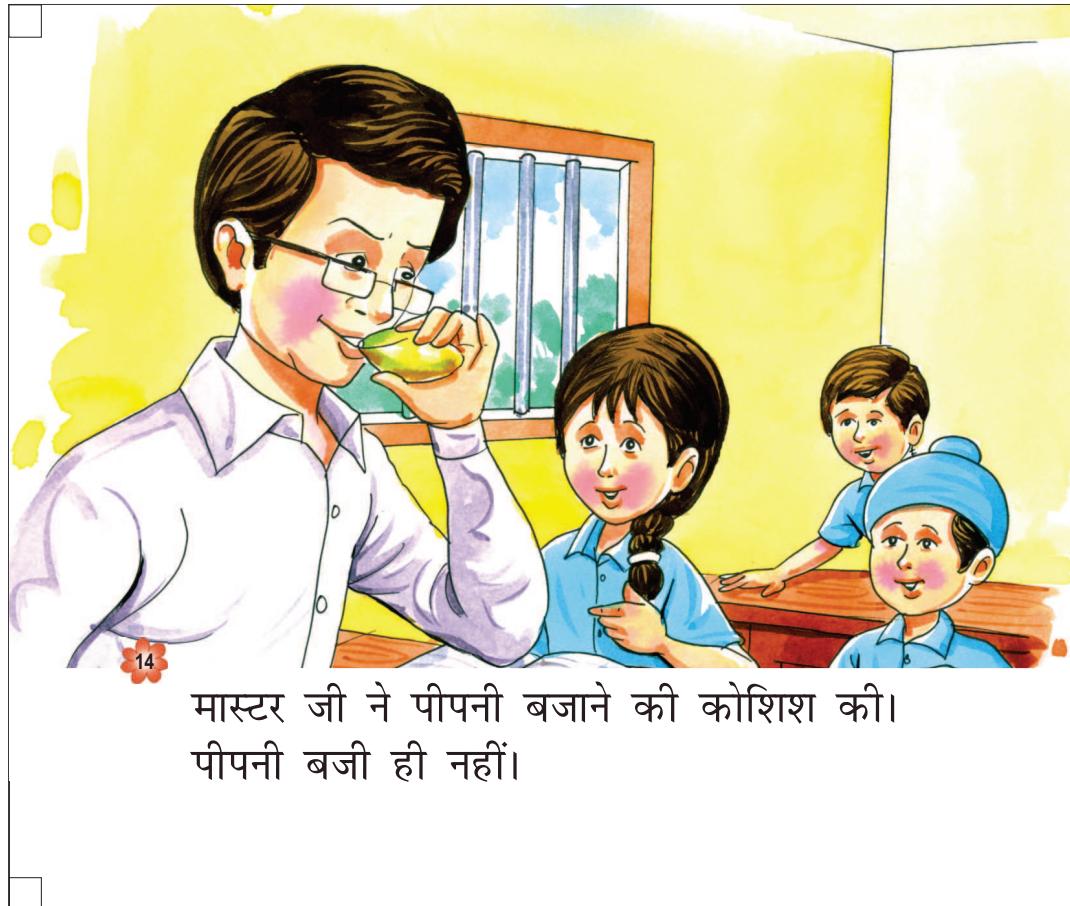
मास्टर जी ने दुबारा पूछा।  
बबली ने बता दिया कि जीत पीपनी लाया था।



13

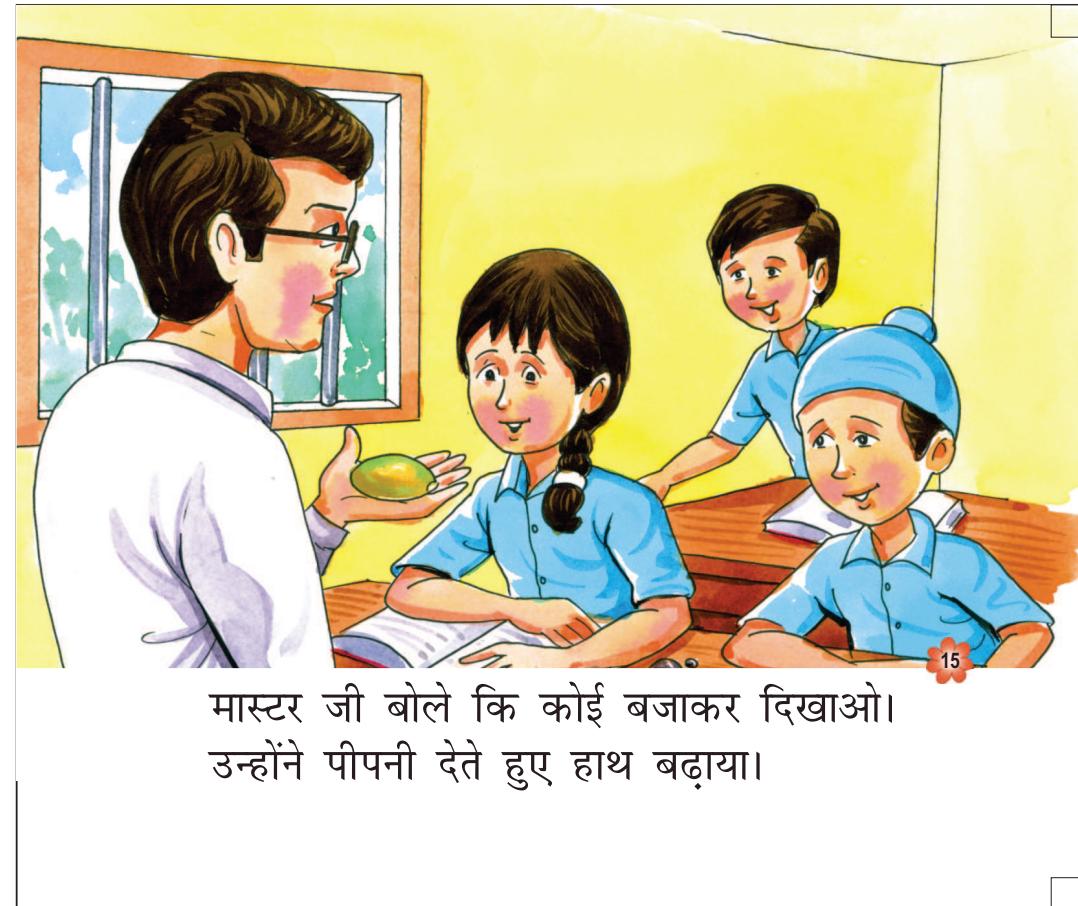
मास्टर जी ने पीपनी माँगी।  
बबली ने डरते-डरते पीपनी मास्टर जी को दे दी।





14

मास्टर जी ने पीपनी बजाने की कोशिश की।  
पीपनी बजी ही नहीं।



15

मास्टर जी बोले कि कोई बजाकर दिखाओ।  
उन्होंने पीपनी देते हुए हाथ बढ़ाया।

बच्चे पीपनी बजाने के लिए मास्टर जी की तरफ दौड़े।  
हम बजाएँगे -हम बजाएँगे -हम बजाएँगे।



## जीत और बबली की और कहानियाँ

